शोध विविधा

भाषा, साहित्य एवं मानविकी के पूर्व समीक्षित तथा संदर्भित गुणवत्तापूर्ण शोधपत्रों का पुस्तक अध्याय के रूप में संकलन

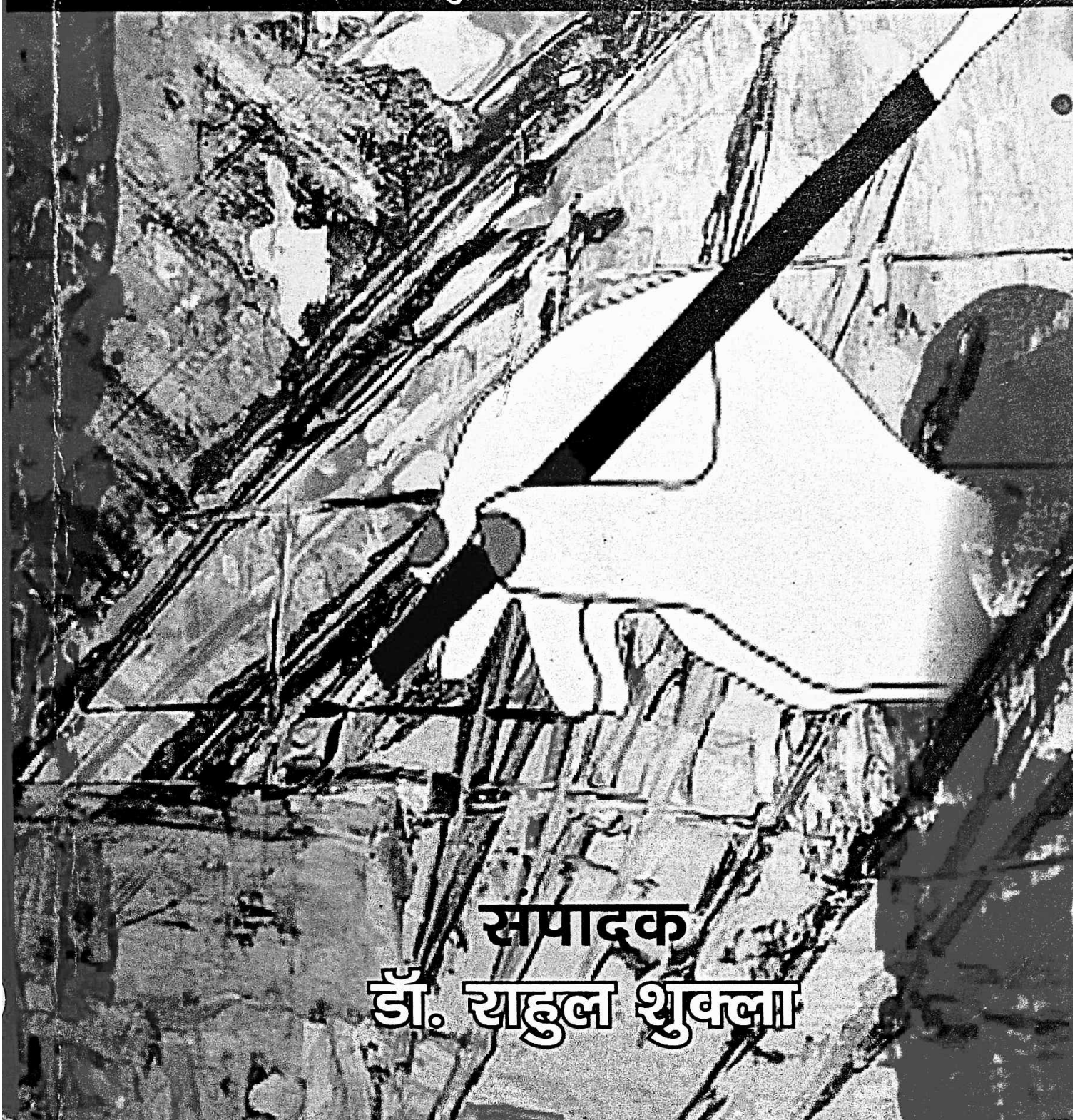

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला

शोध विविधा

भाषा, साहित्य एवं मानविकी के पूर्व समीक्षित तथा संदर्भित गुणवत्तापूर्ण शोधपत्रों का पुस्तक अध्याय के रूप में संकलन

संपादक

डॉ. राहुल शुक्ला

एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी., नेट

विभागाध्यक्ष, हिन्दी-विभाग,

अभिनव प्रज्ञा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

हरदौरपुर, चौडगरा, फतेहपुर (उ.प्र.)

संकल्प प्रकाशन

कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-942779-7-2

पुस्तक का नाम :
शोध विविधा

संपादक
डॉ. राहुल शुक्ला

कापीराइट
© प्रकाशक

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021 (उ.प्र.)
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
डिवाईन डिजिटल प्रेस, दिल्ली

प्रथम संस्करण 2020

मूल्य : 595/-

Sodh Vividha
Collection of Qualitative Peer reviewed and Referred Research Paper of Languages, Literature & Humanities in the form of book Chapter
Editor : Dr. Rahul Shukla
Price : Five Hundred Ninty Five Only.

अनुक्रम

1. रीतिकवि घनानंद की प्रासंगिकता
   डॉ. डी. एस. ठाकुर
2. मुक्तिबोध के काव्य में मूल्य-चेतना
   डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
3. कोई सरहद इन्हें न रोके
   ('जिस लाहौर नई देख्या ओ जम्याई नई' के विशेष संदर्भ में)
   डॉ. नानासाहेब गायकवाड़ 'संगीत'
4. रामकथा के आदर्श पात्रों का चरित्रांकन
   (डॉ. रामकुमार वर्मा के एकांकियों के विशेष संदर्भ में)
   डॉ. धीरज जनार्धन व्हत्ते
5. रत्नकुमार सांभरिया की कहानियों में स्त्री-विमर्श
   प्रा. काळे सुभाष आप्पासाहेब
6. दलित आत्मकथा 'जूठन' का संत्रास
   डॉ. एम.एल. पाटले
7. नरेशचन्द्र सक्सेना 'सैनिक' के साहित्य में आदर्श स्थापना : एक अनुशीलन
   डॉ. शिवप्रताप सिंह
8. भारतीय संगीत का पौराणिक इतिहास
   डॉ. एम.आर. आगर, डॉ. हरिणी रानी आगर
9. भारतीय संस्कृति विमर्श
   डॉ. मंजुला पांडेय
10. कविवर पं. अनूप शर्मा : व्यक्तित्व एवं विचारधारा
    डॉ. शिवपाल सिंह
11. हरिशंकर परसाई के व्यंग्य साहित्य में चित्रित शैक्षणिक विसंगतियां : एक अनुशीलन
    डॉ. पंकज कुमार यादव
12. समकालीन हिंदी कहानी में विद्रोह के स्वर
    डॉ. (श्रीमती) परमजीत पाण्डेय
13. धर्मशास्त्रों में सामाजिक समरसता
    डॉ. (श्रीमती) अंजू शुक्ला
14. जनजातीय महिला-विकास एवं वैश्वीकरण
    डॉ. (सुश्री) भावना कमाने

2

मुक्तिबोध के काव्य में मूल्य-चेतना

डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

गजानन माधव मुक्तिबोध की रचनाएं विभिन्न–पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनकी आरंभिक रचनाएं युवक मन की रचनाएं हैं। मुक्तिबोध ने अपने काव्य में छायावाद के सौंदर्य एवं प्रेमपक्ष को भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया है।

उनकी कविताओं में मार्क्स के यथार्थवादी चिंतन की वैचारिकता दृष्टिगोचर होती है। युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों की यह अनिवार्य मांग थी और कोई भी सजग साहित्यकार अपने युग की मांग से अधिक समय तक अलग नहीं रह सकता है।

मुक्तिबोध ने 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष एवं अन्य निबंध' में कविता पर मार्क्सवादी दृष्टिकोण से विचार–विमर्श किया है। उनके शब्दो में– "काव्य–रचना केवल व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया नहीं वह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है और फिर भी वह एक आत्मिक प्रयास है। उसमें जो सांस्कृतिक मूल्य परिलक्षित होते हैं, वे व्यक्ति की अपनी देन नहीं, समाज की या वर्ग की देन हैं।"[1]

मार्क्स ने समाजिक विकास के इतिहास को वर्ग–संघर्ष का इतिहास कहा है। समाज में दो वर्ग हैं– एक शोषक तथा दूसरा शोषित। साहित्यकार भी इन्हीं वर्गों से संबंधित होता है। इसी बात को स्वयं मुक्तिबोध ने अनुभव किया है। वे लिखते हैं– "हिंदी में इन दिनों दो प्रकार के वर्ग काम कर रहे हैं। एक उच्च मध्यमवर्गीय जन, दूसरे निम्न मध्यवर्गीय जन। इन दोनों के बीच की खांई लगातार बढ़ती जा रही है।"[2]

मूल्यों की सही एवं सार्थक पहचान के कारण मुक्तिबोध को ईमानदार लेखक माना जाता है। यहां यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखने की है कि कवि मूल्यों की चर्चा जहां कहीं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में करता है, उसके मूल में संघर्ष अवश्य है– इसी संघर्ष के मध्य निर्मित मूल्य उसकी दृष्टि में सही मूल्य हैं और संघर्ष पर आधारित उसकी मूल्य–चेतना है। मुक्तिबोध अन्य मूल्य–चिंतकों एवं सर्जकों कवियों या लेखकों से भिन्न साहित्य और जीवन–मूल्य में 'संघर्ष' की महत्ता को उजागर करते हैं।

मुक्तिबोध की सभी कविताओं में मूल्य–चेतना की विभिन्न स्थितियों, पक्षों, संदर्भों को अपने में संजोये रखा गया है। मुक्तिबोध एक शोधक कवि की तरह निरंतर आत्ममुक्ति से मानवमुक्ति तक की यात्रा तय करते हैं। जहां आत्ममुक्ति में वैयक्तिक मूल्य–चेतना है, वहीं मानवमुक्ति में जनवादी चेतना है। मुक्तिबोध की मूल्य–चेतना में सामाजिक धरातल पर सभ्यता और शोषण को केंद्र में रखा गया है। वह पूरे हिंदुस्तान को 'अंधेरे में' कविता के माध्यम से देखने का प्रयत्न करते हैं। वह आम आदमी से लेकर देश के राजनेता तक की वस्तुस्थिति का परिचय करवाते हैं।

कवि के संपूर्ण चिंतन का आधार अनुभव है और यही जीवन–अनुभव उसे कभी आत्मसंघर्ष की स्थिति में ले जाता है, कभी ऐसे रूप से भी परिचित करवाता है जिसमें वह अपनी पहचान करता है। वास्तव में यही आत्मविश्लेषण और साक्षात्कार है, जो कि मूल्यों का बहुत बड़ा आधार है। वैयक्तिक मूल्यों को अलग बताना बड़ी कठिन समस्या है, क्योंकि कवि जिस निजी धारणा अथवा मान्यता को इंगित करता है, वह सीमित और सूत्ररूप में प्रस्तुत होकर एकाएक व्यापक संदर्भ ग्रहण कर लेती है। इस प्रकार उनकी वैयक्तिक मूल्य–चेतना, सामाजिक मूल्य–चेतना का व्यापक अर्थ ग्रहण किये हुये हैं।

'ब्रह्मराक्षस' कविता में कवि वैयक्तिक मूल्य के रूप को स्पष्ट करता है, जिसमें विशेष रूप से दो शक्तियां काम कर रही हैं– एक सद्वृत्ति से युक्त नैतिक आचरण की मूल्यदृष्टि तथा दूसरी स्वार्थवृत्ति वाली दृष्टि। मुक्तिबोध की कविता समग्र रूप में मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी की छटपटाहट की कविता है, जिसमें कवि निरंतर अपनी पहचान करना चाहता है। आत्म–परिचय से जग–परिचय संभव है। इसलिए इस कविता के अंत में वह जहां एक ओर अंतर्विरोध, मानसिक विकलता की बात करते हैं, वहीं दूसरी ओर आंतरिकता के मूल्य का भी संकेत कर देते है। जैसे –

"आत्मचेतस किंतु इस। व्यक्तित्व में थी प्राणमय,
अनबन...। विश्वचेतस बे–बनाव।। महत्ता के चरण में था।
विषादावूल मना। मेरा उसी से उन दिनों होता मिलन
यदि। तो व्यथा उसकी स्वयं जीकर। बताता मैं उसे उसका
स्वयं का मूल्य। उसकी महत्ता। वह उस महत्ता का
हम सदियों के लिए उपयोग। उस आन्तरिकता का बताता मै महत्व"[3]

उनके सामने कोई एक व्यापक लक्ष्य नहीं है। ऐसे लोगों पर वह जहां करारा प्रहार करते हैं, वहां समाज में उत्तरोत्तर मूल्यहीनता की स्थिति का उल्लेख भी करते हैं। वस्तुतः समाज में कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो कवि की तरह सिर्फ अपने लिए ही नहीं जीते, उनके जीने में जीवन के प्रति थोड़ी सार्थकता, लक्ष्य तथा आदर्श रहता है। यही कारण है कि ऐसे लोगों को स्वार्थी लोग जब समाप्त कर देते हैं, तब कवि को लगता है कि एक पूरा युग समाप्त हो गया है। ऐसा मूल्य–संकल्पित व्यक्ति भले ही–

"मारा गया वह बधिकों के हाथों। मुक्ति का इच्छुक वृषार्त अन्तर।
मुक्ति के यत्नों के साथ निरंतर। सबका था प्यारा।
अपने में द्युतिमान। उसका यों वध हुआ। मर गया एक युग"[4]

ऐसा युगपुरुष जो जीवन आदर्श के प्रति समर्पित व्यक्ति है, को मुक्तिबोध ने चेतनापुरुष का नाम दिया है। कवि इस समाज की मूल्यहीनता में अपने आपको कई बार एडजस्ट करने में असमर्थ पाता है। कवि को लगता है कि सारा समाज एक ऐसे मूल्यहीन मार्ग की ओर जा रहा है, जहां वह अपने को अकेला पाता है, परंतु ऐसे सामाजिक भटकाव में भी वह अपने आपसे छल नहीं करता, अपने आपको धोखा नहीं देता। जीवन के छोटे–छोटे लालच उसके मार्ग में बाधा नहीं डाल सकते। तभी तो वह कहता है–

"कविता में कहने की आदत नहीं, पर कह दूं।
वर्तमान समाज में चल नहीं सकता। पूंजी से जुड़ा हुआ

हृदय बदल नहीं सकता। स्वातंत्र्य व्यक्ति का वादी।
छल नहीं सकता मुक्ति के मन को। जन को"[5]

मुक्तिबोध की कविताएं सामाजिक संदर्भ की परिचायक हैं, जो लहूलुहान मानव की पहचान करती हैं– आम आदमी से तथा कथित पूंजीपति एवं नेता वर्ग का साक्षात्कार और कवि आक्रोश एवं संघर्ष को आत्मसात करती हैं। यही कारण है कि मुक्तिबोध के मूल्य–संसार को कुछ निश्चित वर्गों तक या एक सीमा में आबद्ध नहीं किया जा सकता।

वैयक्तिक मूल्यों का बहुत बड़ा पक्ष सामाजिक मूल्यों पर आधारित है। समाज को व्यक्ति से अलग समझना असंभव है। सामाजिक प्राणी में सजगता एवं संकल्प–शक्ति होनी चाहिए। मुक्तिबोध ने राही अर्थों में इस तथ्य को अनुभव के धरातल पर समझकर व्यवहार में लाने का सफल प्रयास किया है। यही कारण है कि वह 'गुलामी की जंजीरे टूट जायेंगी' कविता में आम लोगों के संपर्क से अनुभव ग्रहण करता है और फिर उन्हें उनका प्राप्य दिलवाने के लिए संघर्ष का मार्ग अपनाता है–

"बनने के लिए हम इन्सान। कहाये है आदमी। मानव के लिए हम।
हमारे लिए ही हम गलियों में रहेंगे और गलियों में
खपेंगे। गलियों में रहने वाले के लिए हम लड़ेंगे।"[6]

सामाजिक मूल्यों को प्रस्तुत करने में किसी भी कविता का विशेष महत्व है। इसमें कवि समाज में नारी के स्थान एवं तद्विषयक मूल्य को भी संक्षेप में प्रस्तुत करना चाहता है। उसे ऐसा लगता है कि समाज में नारी जिसे ममता, आदर्श, त्याग एवं पूजा के योग्य समझा जाता रहा है, अब वह बौनी, तिरस्कृत एवं अपमानित है। उसे सामाजिक दृष्टि से नगण्य माना जाता है, इसीलिए वह अंततः कविता से उसे जागृत कर 'प्राण के कोमल अंगारों की तालिका' से संबोधित करता है। सही अर्थों में मूल्यों के धरातल पर मुक्तिबोध जनवादी लोकजीवन के कवि हैं।

सामाजिक मूल्यों में मुक्तिबोध की दृष्टि जन–सामान्य के प्रति विशेष रही है। इसीलिए तो वह 'गलियों' में जाकर क्रांति–विद्रोह की सही शुरुआत करना चाहते हैं। मूल्य की दृष्टि से मूलतः आज व्यक्ति और समाज में 'स्वार्थ' हावी है– व्यापक परोपकार के दायित्व से वह विमुख हो रहा है। तभी मुक्तिबोध 'अंधेरे में' कविता में अपने आदर्शवादी तथा सिद्धांतवादी मन से बार–बार एक ही प्रश्न करते हैं कि उस जीवन को जीने में क्या सार्थकता जिसमें देश मर जाये और हम उस मृत देश में जीवित रहें। इसीलिए देश की रक्षा सर्वोच्च मूल्य माना जाता है। आत्मरक्षा के मूल्य को भी इसकी रक्षा के लिए न्योछावर किया जाना चाहिए। कवि को पूर्ण विश्वास है कि आज समाज में मूल्यहीनता की स्थिति का प्रमुखतम कारण स्वार्थांधता हो है। इसीलिए तो वह पुकार–पुकार कर ऐसे लोगों से चारित्रिक बदलाव के साथ आम आदमी को भी वस्तुस्थिति से परिचित करवाने के लिए उन्हें जिम्मेदार समझता है और कहता है –

"सूनो, सूनने वालो। पशुओं के राज्य में बियाबान जंगल है।
उसमें खड़ा है घोर स्वार्थ का प्रभीमकाय। बरगद एक विकराल।"[7]

कवि की सभी कविताओं का उसकी मूल्य–चेतना की दृष्टि से महत्व है। अनेक उदाहरणों एवं उनके विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि कवि की प्रत्येक रचना सोद्देश्य है।

मूल्य–चेतना के वैयक्तिक, सामाजिक पक्ष की चर्चा करते समय राजनीतिक मूल्यों की ओर संकेत करना भी आवश्यक है। राजनीति के कारण यह मूल्य–चेतना विशेष रूप से प्रभावित होती

है। इसीलिए मुक्तिबोध ने जहां सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक मूल्यों में प्रजातंत्र, तानाशाही, सामंती व्यवस्था, साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रति अपनी सही समझ का परिचय अपने वक्तव्यों में प्रस्तुत किया है, वहां उन्होंने समाजवाद, मार्क्सवाद एवं साम्यवाद की वास्तविकता को उद्घाटित करते हुए वर्ग–संघर्ष के अनेक रूपों को भी प्रस्तुत किया है। व्यवस्था की सांकेतिक अभिव्यक्ति करते हुए कवि राजनीतिक व्यवस्था पर व्यंग्य करता है–

"राजनीतिक साहित्य क्षेत्र भी। महा असत्य शूकरों का है,
एक तमाश। यद्यपि बोली जाती मुंह से।
भारतीय संस्कृति की भाषा है।"[8]

कवि ने राजनीतिक व्यवस्था को घुग्घू सियार, भूत–पिशाचों की व्यवस्था का नाम दिया है। 'अंधेरे में' कविता में राजनीतिक चेतना को व्यापक रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें वह गांधी–तिलक के संदर्भ–संकेतों द्वारा व्यवस्था की वास्तविकता का पर्दाफाश करता है। वह युगीन समस्याओं को क्रांति द्वारा सुलझाने का पक्षधर है।

मुक्तिबोध ने 'रावण' को आधुनिक सहस्त्रमुखी व्यवस्था के प्रतीक रूप में प्रस्तुत कर राजनीतिक चेतना की ओर संकेत किया है। राजनीतिक मूल्य के अंतर्गत जिस आदर्श अथवा नैतिक आधार को आत्मसात कर जनहित के लिए ये नेता कार्यरत हुआ करते थे, वर्तमान में सब कुछ उसके विपरीत हो चुका है। राजनीति आज 'रक्षक' की अपेक्षा 'भक्षक' बन चुकी है। तभी रामू के माध्यम से कवि स्पष्ट रूप से स्वीकार करता है कि–

"रामू जानता है कि पूंजीवादी शक्तियां।
जन–जन की छाती पर बैठकर।शासन के चाकू से।
विद्रोहिनी बुद्धि की त्रिकालदर्शी आंखों को काटकर।
निकाल देना चाहती हैं।"[9]

निष्कर्ष रूप में, हम यह कह सकते हैं कि मुक्तिबोध का मूल्य–संसार उनके विस्तृत ज्ञान एवं अनुभव का परिचायक है। मूल्यों के संबंध में उनकी जो निजी धारणाएं दृष्टिगोचर होती हैं, उन्हें कुछ कविताओं के द्वारा प्रतिपादित किया गया है। वस्तुतः मुक्तिबोध एक ऐसे कवि हैं जिनकी प्रत्येक कविता सोद्देश्य है और किसी–न–किसी मूल्य की व्यंजक है।

संदर्भ :

1. नयी कविता का आत्मसंघर्ष एवं अन्य निबंध, मुक्तिबोध, पृ. 5
2. वही, पृ.सं. 28–29
3. चांद का मुंह टेढ़ा है, मुक्तिबोध, पृ. 40–41
4. वही, पृ. 283–284
5. वही, पृ. 292
6. मुक्तिबोध रचनावली, पृ. 151
7. भूरी–भूरी खाक धूल मुक्तिबोध, पृ. 184
8. वही, पृ. 184
9. वही, पृ. 185

सहायक प्राध्यापक, हिंदी–विभाग,
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, जिला– नांदेड (महाराष्ट्र)
मो. 8180875513